



## सर्वांगीण विकास की प्रणाली : जीवन विज्ञान



शिक्षा का उद्देश्य है कि विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास हो। इसके लिये मस्तिष्क के उन सभी केन्द्रों को सक्रिय करना होगा जो उन-उन गुणों के मूल स्रोत हैं। जब कुछ केन्द्र सोए रहते हैं और कुछ जागृत हो जाते हैं, तब सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता। सर्वांगीण विकास में यह माना जाता है कि व्यक्ति का शरीर स्वस्थ हो, बुद्धि विकसित हो और भावना शुद्ध हो। इन चारों के संतुलित विकास को सर्वांगीण विकास कहा जा सकता है। एकांगी विकास में समस्याएं अधिक उभरती हैं। एकांगी विकास चाहे धर्म का हो या बुद्धि का, उससे समाज व्यवस्था नहीं चल सकती। धर्म या अध्यात्म के एकांगी विकास से कोई गुफा में बैठकर साधना तो कर सकता है पर समाज व्यवस्था को नहीं चला सकता। समाज के व्यवस्थित संचालन के लिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—ये चारों पुरुषार्थ अपेक्षित माने जाते हैं। धर्म और मोक्ष को नहीं छोड़ा जा सकता तो अर्थ और काम की उपेक्षा भी नहीं की जा सकती। समाज में सबकी अपेक्षा है। इनका संतुलन चाहिए। एकांगी धार्मिक विकास भी कभी—कभी अंधविश्वास में बदल जाता है। चारों का समन्वित विकास ही समाज को स्वस्थ रख सकता है। मस्तिष्क के सभी उत्तरदायी केन्द्रों को एक साथ सक्रिय करना जरूरी है, जो वास्तविक मूल्यों के मूल स्रोत हैं। यही जीवन—विज्ञान की परिकल्पना का आधार है। — आचार्य महाप्रज्ञ।

## जीने का वैज्ञानिक तरीका जीवन विज्ञान : मुनि किशनलाल

लाडनू 31 जनवरी। जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग में प्रसार भाषणमाला कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रेक्षा प्राध्यापक मुनिश्री किशनलाल ने उपस्थित प्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं को सम्मोहित करते हुए



कहा कि “जीने का व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक तरीका है जीवन विज्ञान”। स्वस्थ समाज की रचना के लिए जीवन विज्ञान एक वरदान की तरह है। उन्होंने छात्राध्यापिकाओं को अच्छा शिक्षक तथा इन्सान बनने के लिए, छोटी-छोटी बातें जीवन में अपनाने का संदेश दिया। **क्रमशः पृ.2.पै.1**

## मरने की कला



जीने की कला की भाँति मरने की भी कला होती है। मृत्यु की कला को वही व्यक्ति जान सकता है जो जीवन की कला से अभिज्ञ होता है। भगवान महावीर कला मर्मज्ञ थे। उन्होंने जैसे जीने की कला का दर्शन दिया, वैसे ही मृत्यु की कला को भी विश्लेषित किया। आगम में कहा गया है—कल का भरोसा तीन व्यक्ति कर सकते हैं। एक वे, जो मौत के साथ अपनी दोस्ती मानते हैं। उन्हें भरोसा होता है कि दोस्ती के नाते मौत उन्हें नहीं ले जायेगी। दूसरे वे व्यक्ति होते हैं, जो अपने आपको कुशल धावक मानते हैं। उन्हें विश्वास होता है कि मौत इस रास्ते से आयेगी तो मैं उस रास्ते से पलायन कर जाऊंगा। तीसरे वे व्यक्ति होते हैं जो अपने आपको अमर मानते हैं। उनके मन में दृढ़ निश्चय होता है कि मौत उन्हें कभी आयेगी ही नहीं। पर काल का अन्तर्हीन प्रवाह इस बात का साक्षी है कि मृत्यु ने आज तक न तो किसी के साथ दोस्ती की है, न कोई पलायन करने में सफल हुआ है और न कोई अमर बना है। देवों का एक पर्यायवाची शब्द है अमर, पर अमर वे भी नहीं रहते। एक दिन उनका भी अवसान होता है। मृत्यु जब निश्चित है तो इसे कलात्मक कैसे बनाया जा सकता है? यह एक अहम् प्रश्न है। महावीर के दर्शन में जीने और मरने का महत्व नहीं है। महत्व संयम और समाधि का है। असंयममय जीवन भी काम्य नहीं है, मृत्यु भी काम्य नहीं है। कलात्मक जीवन जीते हुए व्यक्ति कलात्मक मृत्यु के दर्शन को समझे और उससे अभय बनकर अपनी हर सांस को सफल बनाए, यह काम्य है। **आचार्य महाश्रमण।**

## नागपुर महाराष्ट्र में जीवन विज्ञान अकादमी की स्थापना

नागपुर 2 फरवरी। आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या साध्वीश्री कीर्तिलताजी ठाणा—4 के पावन सान्ति धर्म में 2 फरवरी 2014 को नागपुर में जीवन विज्ञान अकादमी का गठन हुआ। इस बाबत विशेष रूप से आयोजित सभा को संबोधित करते हुए साध्वीश्री वर्तमान शिक्षा प्रणाली में जीवन विज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला और इसके अधिकाधिक प्रचार—प्रसार की प्रेरणा दी।

इसी सभा में आनन्दमल सेठिया को सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया। श्री सेठिया प्रेक्षा—प्रशिक्षक के रूप में गत लगभग दो वर्षों से आसन—प्राणायाम और प्रेक्षाध्यायन की कक्षाओं का संचालन कर रहे हैं। अपने वक्तव्य में श्री सेठिया ने कहा कि अकादमी का गठन आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के दौरान हुआ है। उन्होंने गुरुदेव तुलसी के सपनों को साकार करने हेतु अधिक से अधिक संख्या में जुड़ने हेतु समाज से अपील की। 16 फरवरी को अपनी कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए श्री सेठिया ने सुश्री सेफाली शाह को उपाध्यक्ष, श्री जतनलाल मालू को मंत्री, सुश्री स्वाति सोनी को सहमंत्री तथा श्री गुलाबचन्द छाजेड़ को कोषध यक्ष पद का दायित्व सौंपा। इनके अतिरिक्त रत्नमाला जोशी, सुनील छाजेड़, स्नेहल मनिहार, साक्षी सहगल, हीतेश पुरोहित, जिनेशी ठक्कर, श्रेया गोयल एवं शिल्पा मालू को कार्यकारी सदस्य मनोनीत किया गया। सभी को **केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी परिवार की हार्दिक बधाई।**

## कोलकाता में जीवन विज्ञान शिक्षक सेमीनार

कोलकाता 25 जनवरी। आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में जीवन विज्ञान अकादमी, अणुव्रत समिति एवं दक्षिण कोलकाता श्री जैन श्वेता भाषण कोलकाता के संयुक्त तत्वावधान में जीवन विज्ञान शिक्षक सेमीनार का आयोजन हुआ, जिसमें 40 शिक्षण संस्थाओं के शिक्षक-शिक्षिकाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अणुव्रत गीत से हुआ। स्वागत भाषण के माध्यम से अणुव्रत समिति अध्यक्ष श्यामसुन्दर चौरड़िया ने जीवन विज्ञान प्रयोगों से जीवनशैली परिवर्तन का आह्वान किया। सभा अध्यक्ष भंवरलाल बैद ने आचार्य तुलसी को याद करते हुए शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में इस प्रकार के कार्यक्रम के आयोजन हेतु आयोजकों की प्रशंसा की। जीवन विज्ञान अकादमी अध्यक्ष प्रकाशचन्द्र नाहर ने अकादमी के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए जीवन विज्ञान को विभिन्न स्कूलों तक पहुंचाने का संकल्प लिया। ईस्टर्न जॉन के समन्वयक नवरतनमल सुराना ने उनके संकल्प की अनुमोदना करते हुए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

प्रथम प्रायोगिक सत्र का प्रारम्भ प्रो.अरुण मुखर्जी द्वारा हुआ, उन्हानें जैन-धर्म को सच्चा मानव धर्म बताते हुए आचार्य तुलसी को मानवता का मसीहा बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान जीवनशैली की कल्पना आचार्य तुलसी ने साठ वर्ष पहले ही कर ली थी अतः धर्म-सम्प्रदाय से ऊपर उठकर अणुव्रत के माध्यम से सभी को एक सूत्र में पिरेने का प्रयास किया। प्रादेशिक अ.स. के पूर्व अध्यक्ष प्रकाशचन्द्र सुराणा ने अणुव्रत आचार संहिता की विस्तृत व्याख्या की। प्रायोगिक प्रशिक्षण क्रम में डॉ.सुनिता सेठिया, ज्योति दूगड़, सुमित्रा दूगड़, उषा धाड़ेवा, दीपशिखा बैद, जयश्री संचेती एवं रंजीत दूगड़ का महत्वपूर्ण सहयोग मिला। कार्यक्रम को सफल बनाने में पुष्पा बैद, संजय पारेख, अरुण गंग एवं वाटिका नाहर ने सक्रिय सहभागिता निभाई। इस अवसर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के निर्वत्मान अध्यक्ष करणसिंह नाहटा, दक्षिण सभा के सचिव विजयसिंह चौरड़िया सहित समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। डॉ. सुनिता सेठिया के धन्यवाद ज्ञापन पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। संचालन बसंत दस्सानी ने किया।

**क्रमशः पृ.1.पै.1** उन्होंने कहा कि हमारे जीवन में सहनशीलता होनी चाहिए, दिल बड़ा रखना चाहिए, भाषा मधुर होनी चाहिए, अच्छाई को हमेशा खोजते रहना चाहिए, दूसरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते रहना चाहिए और बैठते वक्त हमारा मेरुदण्ड सीधा रहना चाहिए। विद्यार्थियों को स्वस्थ रहने के लिए निरन्तर आसन तथा प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। यदि हम इन बातों को जीवन में उतारते हैं तो स्वस्थ समाज के निर्माण में अपना योगदान दर्ज करने में सक्षम हो सकते हैं।

मुनिश्री सौम्यकुमार ने विद्यार्थियों साथ मित्रवत व्यवहार करने का संदेश देते हुए आह्वान किया कि हमें ये संकल्प करना चाहिए कि कम से कम ऐसे बच्चों को पूर्ण शिक्षित करें जो शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ हैं। जीवन विज्ञान अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने जीवन विज्ञान के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि किस तरह जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग का विद्यालयों में उपयोग किया जाए जिससे विद्यार्थियों के शिक्षा को साथ-साथ आसन-प्राणायाम आदि का लाभ हो। उन्होंने छात्राध्यपिकाओं को आसन प्रणायाम के प्रयोग कराया जिससे वह विद्यालयों में जाकर इसका प्रयोग करवा सके। इस अवसर पर विभाग के समस्त प्राध्यापक तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। प्रसार भाषणमाला का संयोजन एवं आभार ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. बी.एल. जैन ने किया।

## मर्यादा प्राण है : मुनि किशनलाल

लाडनूँ 6 फरवरी। जैन विश्व भारती एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, लाडनूँ के संयुक्त तत्वावधान तथा आचार्य महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल के सान्निध्य में मर्यादा-महोत्सव के



अवसर पर अहिंसा भवन में 'मर्यादा और अनुशासन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित संगत को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के प्रत्येक पक्ष को मर्यादा की माला में गूढ़ने हेतु आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने संविधान रूपी मर्यादा-पत्र का निर्माण किया। इन मर्यादाओं की सतत स्मृति एवं जागरूकता बनाये रखने हेतु चतुर्थ आचार्य जयाचार्य द्वारा माघ शुक्ला सप्तमी वि.सं. 1921 को बालोतरा में प्रथम मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। इस कड़ी में 150वां महोत्सव आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में गंगाशहर में आयोजित हो रहा है। उन्होंने कहा कि मर्यादा जीवन है, मर्यादा प्राण है, मर्यादा व्यक्तित्व विकास का आधार है। मर्यादाओं का पालन सुरक्षित जीवन का कवच है वहीं इनका उल्लंघन दुर्घटनाओं का जनक है। जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में आचार्य तुलसी को स्मरण करते हुए मुनिश्री ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने मर्यादाओं की आचार संहिता के रूप में अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया।

इस अवसर पर सेवाकेन्द्र व्यवस्थापिका साधी रतिप्रभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मर्यादा वही बनाता है जो आत्मशासित हो। आपने कहा कि निर्धारित मर्यादाओं में छूट नहीं होनी चाहिए। ऐसा होने पर इनमें विकृति आ जाती है। मुनि सौम्यकुमार ने कहा कि मर्यादा-महोत्सव एक दिन के लिये है परन्तु मर्यादित जीवन सदासर्वदा के लिये होना चाहिए। मर्यादा जागरण का मंत्र है जो सृष्टि के कल्याण का हेतु है। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने मर्यादा-पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अमर्यादित जीवन के कारण ही अतुलित बलशाली रावण विनाश को प्राप्त हुआ। वयोवृद्ध संत रिद्धकरणजी, कुलसचिव डॉ. अनिलधर तथा डॉ. पी.आर. कुचेरिया ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुनि नीरज के गीत 'मर्यादा मंगल करे.. के साथ हुआ। साधी जयंतमाला तथा जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महिला मण्डल की बहनों ने गीतिका एवं सुनिता बैद ने मुक्तक के माध्यम से अपने भावों को प्रकट किया। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय तथा विमल विद्या विहार के विद्यार्थी, जैन विश्व भारती एवं जैन विश्वविद्यालय के कर्मचारी, पदाधिकारी सहित तेरापंथ समाज के अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अकादमी के सहायक निदेशक हनुमान मल शर्मा ने किया।